International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

कोविड-19 काल में भारत की वैक्सीन कूटनीति का अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव

डॉ. राकेश कुमार जायसवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कोविड-19 महामारी ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी, आपूर्ति शृंखला और मानवीय सहयोग को अभूतपूर्व केंद्रीयता प्रदान की। 2020-2021 के दौरान जब विकसित देशों में 'वैक्सीन राष्ट्रवाद' और अग्रिम खरीद समझौतों के कारण टीकों की विषमता बढ़ रही थी, उस समय भारत ने 'वैक्सीन मैत्री' पहल के माध्यम से वैश्विक दक्षिण, पड़ोसी देशों तथा बहुपक्षीय मंचों पर एक सक्रिय और दावेदार भूमिका निभाई। भारत ने कोविशील्ड और कोवैक्सीन की करोड़ों खुराकें अनुदान, वाणिज्यिक बिक्री और कोवैक्स सुविधा के माध्यम से विभिन्न देशों को उपलब्ध कराईं। इस शोधपत्र का उद्देश्य भारत की वैक्सीन कूटनीति का विश्लेषण सॉफ्ट पावर, स्वास्थ्य कूटनीति, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, क्वाड, और चीन के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में करना है। यह अध्ययन तर्क देता है कि भारत की वैक्सीन कूटनीति केवल मानवीय सहायता कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि यह 21वीं सदी की विदेश नीति का एक बहुआयामी उपकरण थी जिसने भारत की 'फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड' छवि को सुदृढ़ किया, पड़ोस प्रथम नीति को क्रियात्मक आधार दिया, ग्लोबल साउथ में भारत की स्वीकृति बढ़ाई, और बहुपक्षीय मंचों पर भारत को एक जिम्मेदार, नियम-आधारित तथा न्यायोन्मुख शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। साथ ही, यह भी स्पष्ट हुआ कि अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा केवल नैतिक दावों से नहीं, बल्कि सतत घरेलू क्षमता, उत्पादन अवसंरचना और संकट-प्रबंधन की दक्षता से भी जुड़ी होती है। अप्रैल 2021 में भारत में कोविड-19 की दूसरी लहर के दौरान वैक्सीन निर्यात पर रोक ने भारत की विश्वसनीयता पर प्रश्न उठाए, विशेषकर कोवैक्स आपूर्ति बाधित होने के कारण। शोधपत्र का निष्कर्ष है कि भारत की वैक्सीन कूटनीति ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की शक्ति-संरचना में स्वास्थ्य को एक निर्णायक घटक के रूप में स्थापित किया और भारत को वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधि, मानवीय शक्ति, और रणनीतिक संतुलनकर्ता के रूप में उभारा। किंतु इस अनुभव ने यह भी सिद्ध कर दिया कि यदि घरेलू सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षमता, उत्पादन-योजना और निर्यात-नीति में समुचित संतुलन न हो, तो सॉफ्ट पावर अर्जन जितनी शीघ्रता से होता है, उतनी ही शीघ्रता से क्षीण भी हो सकता है।

मुख्य शब्द: वैक्सीन मैत्री, सॉफ्ट पावर, स्वास्थ्य कूटनीति, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, कोवैक्स, क्वाड, भारतीय विदेश नीति, ग्लोबल साउथ, बहुध्रुवीयता, वैक्सीन राष्ट्रवाद

1. प्रस्तावना

कोविड-19 महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि 21वीं सदी की विश्व राजनीति में स्वास्थ्य अब केवल सामाजिक नीति का विषय नहीं रहा, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता, आपूर्ति शृंखला, वैज्ञानिक प्रतिष्ठा और विदेश नीति का भी केंद्रीय प्रश्न बन चुका है। महामारी के प्रारंभिक चरण में देशों ने सीमाएं बंद कीं, चिकित्सा संसाधनों पर नियंत्रण बढ़ाया, औषधीय कच्चे माल के निर्यात पर रोक लगाई और अंततः टीकों के विकास को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा तथा रणनीतिक क्षमता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। इस संदर्भ में "वैक्सीन राष्ट्रवाद" शब्द विशेष महत्व के साथ उभरा, जिसका आशय यह था कि शक्तिशाली देश अपनी आबादी के लिए जरूरत से अधिक खुराकें सुरक्षित कर रहे थे, जबकि निम्न और मध्यम आय वाले देशों को टीकों की उपलब्धता में गंभीर असमानता का सामना करना पड़ रहा था (The Lancet,

2021; UN, 2021)। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने भी सुरक्षा परिषद को संबोधित करते हुए चेताया था कि यदि वैक्सीन तक समान पहुंच सुनिश्चित नहीं की गई तो महामारी वैश्विक असमानताओं को और गहरा कर देगी (UN, 2021)। ऐसे वैश्विक परिदृश्य में भारत की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण बन गई। भारत लंबे समय से जेनेरिक दवाओं और टीकों के उत्पादन में अग्रणी रहा है और उसे "फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड" के रूप में पहचाना जाता है। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया जैसी संस्थाओं ने दशकों से वैश्विक टीकाकरण कार्यक्रमों के लिए बड़े पैमाने पर आपूर्ति की है। कोविड-19 काल में इसी संरचनात्मक क्षमता ने भारत को अवसर प्रदान किया कि वह चिकित्सा-मानवीय सहयोग को विदेश नीति के एक सक्रिय उपकरण में रूपांतरित करे। जनवरी 2021 में भारत सरकार ने "वैक्सीन मैत्री" पहल प्रारंभ की, जिसके अंतर्गत भारत ने अपने पड़ोसी देशों, हिंद महासागर क्षेत्र, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कैरिबियाई देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराई (भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, 2021)। यह पहल केवल मानवीय उदारता का कार्यक्रम नहीं थी; इसके भीतर भारतीय विदेश नीति की दीर्घकालीन अवधारणाएं सक्रिय थीं—वसुधैव कुटुंबकम, पड़ोस प्रथम, रणनीतिक स्वायत्तता, दक्षिण-दक्षिण सहयोग और बहुपक्षीय न्यायपूर्ण व्यवस्था की वकालत। भारत की वैक्सीन कूटनीति को समझने के लिए सॉफ्ट पावर की अवधारणा अत्यंत उपयोगी है। जोसेफ नाई के अनुसार सॉफ्ट पावर वह क्षमता है जिसके माध्यम से कोई देश आकर्षण, वैधता और नैतिक प्रभाव के आधार पर दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करता है (Nye, 2004)। भारत ने कोविड-19 काल में अपनी सॉफ्ट पावर के स्रोतों—मानवीय मूल्यों, विकासशील विश्व के प्रति प्रतिबद्धता, और सार्वजनिक स्वास्थ्य उत्पादन क्षमता—को एक साथ जोड़ा। यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत ने स्वास्थ्य को केवल घरेलू नीति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, प्रतिष्ठा-निर्माण और रणनीतिक संतुलन के साधन के रूप में प्रयोग किया। इस संदर्भ में वैश्विक स्वास्थ्य कूटनीति की वह अवधारणा प्रासंगिक हो जाती है जिसके अनुसार देशों के बीच स्वास्थ्य-संबंधी हितों को वार्ता, सहयोग और नीतिगत समन्वय के माध्यम से साधा जाता है (WHO, 2021)।

भारतीय वैक्सीन कूटनीति का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम दक्षिण-दक्षिण सहयोग से संबंधित है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन, उपनिवेशवाद-विरोध, विकासशील देशों की साझा चुनौतियां और वैश्विक आर्थिक न्याय की मांग—ये सभी तत्व भारत की विदेश नीति में ऐतिहासिक रूप से उपस्थित रहे हैं। कोविड-19 ने इन्हें नई अर्थवत्ता दी। जब पश्चिमी देशों के वैक्सीन संचय से वैश्विक दक्षिण में असंतोष था, भारत ने स्वयं को एक वैकल्पिक साझेदार के रूप में प्रस्तुत किया। यही कारण है कि भारत ने न केवल वैक्सीन आपूर्ति की, बल्कि विश्व व्यापार संगठन में दक्षिण अफ्रीका के साथ मिलकर ट्रिप्स छूट का प्रस्ताव भी रखा, जिससे वैक्सीन और कोविड-संबंधी तकनीकों तक व्यापक पहुंच संभव हो सके। फिर भी, भारत की वैक्सीन कूटनीति निर्विवाद सफलता की कहानी नहीं है। अप्रैल 2021 से भारत दूसरी लहर के विनाशकारी संकट से जूझने लगा। घरेलू मांग में अचानक वृद्धि, उत्पादन सीमाएं, नीति-स्तरीय असंतुलन, और सार्वजनिक स्वास्थ्य तंत्र की कठिनाइयों ने भारत को वैक्सीन निर्यात रोकने के लिए बाध्य किया। इससे उन देशों में चिंता उत्पन्न हुई जो भारत की आपूर्ति पर निर्भर थे, विशेषकर कोवैक्स व्यवस्था के अंतर्गत कई अफ्रीकी और एशियाई देश। परिणामस्वरूप, भारत की सॉफ्ट पावर और विश्वसनीयता पर कुछ हद तक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा (WHO, 2021; Hall, 2021)।

इसी पृष्ठभूमि में यह शोधपत्र निम्नलिखित शोध प्रश्न का परीक्षण करता है: भारत की वैक्सीन कूटनीति ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की शक्ति-संरचना को कैसे प्रभावित किया? इस केंद्रीय प्रश्न के साथ कुछ सहायक प्रश्न भी संबद्ध हैं: क्या वैक्सीन मैत्री ने भारत की सॉफ्ट पावर को स्थायी रूप से सुदृढ़ किया? क्या इसने दक्षिण एशिया में चीन के प्रभाव को संतुलित करने में वास्तविक सफलता प्राप्त की? क्या भारत बहुपक्षीय मंचों पर स्वास्थ्य-न्याय के एजेंडे को आगे बढ़ाने में प्रभावी रहा? और क्या दूसरी लहर के बाद वैक्सीन निर्यात रुकने से भारत की वैश्विक छवि में विरोधाभास उत्पन्न हुआ? यह शोधपत्र पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है और इसमें कोई प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, प्रश्नावली, क्षेत्रीय अध्ययन या स्व-एकत्रित आंकड़ों का उपयोग नहीं किया गया है। अध्ययन की प्रकृति विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक और नीतिशास्त्रीय है। इसमें सरकारी दस्तावेज, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टें, नीति-पत्र, शैक्षणिक लेख, और समसामयिक विश्लेषणों के आधार पर भारत की वैक्सीन कूटनीति का परीक्षण किया गया है। समय-सीमा 2000 से दिसंबर 2021 तक के संदर्भ साहित्य तक सीमित रखी गई है, जबकि विषयगत केंद्र 2020-2021 की महामारी अवधि है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोधपत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. कोविड-19 काल में भारत की वैक्सीन कूटनीति की प्रकृति, संरचना और विस्तार का विश्लेषण करना।
2. सॉफ्ट पावर, स्वास्थ्य कूटनीति और दक्षिण-दक्षिण सहयोग के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में भारत की नीति का मूल्यांकन करना।
3. पड़ोस प्रथम नीति, चीन के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, क्वाड सहयोग और बहुपक्षीय मंचों पर भारत की भूमिका पर वैक्सीन कूटनीति के प्रभाव का परीक्षण करना।
4. वैक्सीन निर्यात-प्रतिबंध, दूसरी लहर और आपूर्ति व्यवधानों के कारण उत्पन्न सीमाओं और आलोचनाओं का विवेचन करना।
5. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की बदलती शक्ति-संरचना में भारत की वैक्सीन कूटनीति के दीर्घकालिक निहितार्थों को समझना।

3. शोध प्रश्न

इस शोधपत्र का प्रमुख शोध प्रश्न है:

भारत की वैक्सीन कूटनीति ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की शक्ति-संरचना को कैसे प्रभावित किया?

सहायक शोध प्रश्न:

- भारत की वैक्सीन मैत्री पहल ने भारतीय सॉफ्ट पावर को किस प्रकार प्रभावित किया?
- क्या वैक्सीन कूटनीति ने दक्षिण एशिया में भारत की क्षेत्रीय स्थिति को सुदृढ़ किया?
- भारत की वैक्सीन आपूर्ति और ट्रिप्स छूट पहल ने ग्लोबल साउथ में उसकी नेतृत्वकारी छवि को कितना मजबूत किया?
- दूसरी लहर के दौरान वैक्सीन निर्यात रुकने से भारत की कूटनीतिक विश्वसनीयता पर क्या प्रभाव पड़ा?

4. शोध पद्धति और स्रोत

यह अध्ययन गुणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें कोई प्राथमिक डेटा संकलन नहीं किया गया है। शोध का आधार द्वितीयक स्रोत हैं, जिनमें भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के दस्तावेज, विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्टें, संयुक्त राष्ट्र वक्तव्य, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन और ऑस्ट्रेलियन स्ट्रेटेजिक पॉलिसी इंस्टीट्यूट जैसे नीति-पत्र, द लांसेट जैसी पत्रिकाओं के आलेख, और प्रासंगिक शैक्षणिक स्रोत सम्मिलित हैं। इस दृष्टि से यह शोधपत्र एक दस्तावेजीय और सिद्धांत-आधारित विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

5. सैद्धांतिक ढांचा

5.1 सॉफ्ट पावर

जोसेफ नाई के अनुसार सॉफ्ट पावर किसी राष्ट्र की वह क्षमता है, जिसके माध्यम से वह आकर्षण, सांस्कृतिक प्रभाव, राजनीतिक मूल्यों और विदेश नीति की वैधता द्वारा अन्य देशों की प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकता है (Nye, 2004)। हार्ड पावर जहां दंड, बल, प्रतिरोध और प्रलोभन पर आधारित होती है, वहीं सॉफ्ट पावर सहमति, वैधता और प्रशंसा पर आधारित होती है। भारत की वैक्सीन कूटनीति को इसी सॉफ्ट पावर का आधुनिक उदाहरण कहा जा सकता है। भारत ने न तो सैन्य शक्ति का प्रयोग किया और न ही आर्थिक दबाव का; उसने वैक्सीन उपलब्धता के माध्यम से सद्भाव, विश्वास और नैतिक पूंजी अर्जित करने का प्रयास किया। भारतीय संदर्भ में सॉफ्ट पावर के स्रोत बहुआयामी हैं—सभ्यतागत विरासत, लोकतांत्रिक व्यवस्था, योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड, प्रवासी भारतीय, और अब फार्मास्युटिकल क्षमता। कोविड-19 काल में यह अंतिम तत्व सबसे अधिक मुखर हुआ। भारत ने अपने को न केवल उत्पादक, बल्कि उत्तरदायी साझेदार के रूप में प्रस्तुत किया। यह प्रस्तुति विशेष रूप से उन देशों में प्रभावशाली रही जो पश्चिमी वैक्सीन आपूर्ति से वंचित थे। परंतु सॉफ्ट पावर की एक सीमा यह है कि वह निरंतरता और विश्वसनीयता पर आधारित होती है। यदि कोई देश प्रारंभिक स्तर पर उदारता दिखाए पर बाद में अपने दायित्वों को पूरा न कर

सके, तो उसका आकर्षण कम हो सकता है। भारत के मामले में दूसरी लहर के बाद यही हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि सॉफ्ट पावर केवल छवि का प्रश्न नहीं, बल्कि संस्थागत क्षमता का भी विषय है।

5.2 स्वास्थ्य कूटनीति

स्वास्थ्य कूटनीति उन प्रक्रियाओं, वार्ताओं और नीतियों का समुच्चय है, जिनके माध्यम से राज्य और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं स्वास्थ्य-संबंधी लक्ष्यों को विदेश नीति, विकास सहयोग और वैश्विक शासन के साथ जोड़ती हैं। कोविड-19 महामारी से पूर्व भी एचआईवी/एड्स, सार्स, इबोला और एच1एन1 जैसी घटनाओं ने स्वास्थ्य के अंतर्राष्ट्रीय आयाम को रेखांकित किया था, किंतु कोविड-19 ने इसे अभूतपूर्व केंद्रीयता प्रदान की।

स्वास्थ्य कूटनीति का महत्व इस कारण भी बढ़ा क्योंकि महामारी नियंत्रण किसी एक देश के प्रयासों से संभव नहीं था। संक्रमण की श्रृंखला, यात्रा, व्यापार, आपूर्ति श्रृंखला और अनुसंधान नेटवर्क वैश्विक थे; इसलिए समाधान भी वैश्विक होना आवश्यक था। भारत ने इसी संदर्भ में स्वास्थ्य कूटनीति को न केवल सहायता के रूप में, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय भूमिका-निर्माण के साधन के रूप में अपनाया। वैक्सीन आपूर्ति, दवाओं की उपलब्धता, ट्रिप्स छूट का समर्थन, और बहुपक्षीय मंचों पर वैक्सीन समता की वकालत—ये सभी स्वास्थ्य कूटनीति के अंतर्गत आते हैं।

5.3 दक्षिण-दक्षिण सहयोग

दक्षिण-दक्षिण सहयोग विकासशील देशों के बीच समानता, पारस्परिक सम्मान, तकनीकी साझेदारी, क्षमता-निर्माण और साझा विकास लक्ष्यों पर आधारित है। भारत लंबे समय से अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों के साथ प्रशिक्षण, छात्रवृत्ति, ऋण-सहायता, आईटी सहयोग और औषधीय आपूर्ति के माध्यम से इस सहयोग को बढ़ाता रहा है। कोविड-19 के दौरान यही परंपरा वैक्सीन सहयोग में बदल गई। जब विकसित देशों ने बड़े पैमाने पर अग्रिम खरीद की, तब निम्न और मध्यम आय वाले देशों की निर्भरता कोवैक्स तथा कुछ उत्पादक देशों पर बढ़ी। भारत ने इसी खाली स्थान को भरा। इससे वैश्विक दक्षिण में भारत की स्वीकार्यता बढ़ी। दक्षिण अफ्रीका के साथ ट्रिप्स छूट प्रस्ताव इस बात का प्रतीक था कि भारत केवल उत्पादक ही नहीं, बल्कि न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था का समर्थक भी बनना चाहता था।

5.4 यथार्थवाद और उदारवाद का मिश्रित परिप्रेक्ष्य

भारत की वैक्सीन कूटनीति को केवल आदर्शवादी या केवल स्वार्थ-प्रेरित कहना दोनों ही एकांगी होगा। यथार्थवादी दृष्टिकोण से यह भारत के राष्ट्रीय हित का उपकरण था—पड़ोस में प्रभाव बढ़ाना, चीन का संतुलन करना, वैश्विक प्रतिष्ठा अर्जित करना, और रणनीतिक मंचों पर अपने महत्व को सिद्ध करना। उदारवादी दृष्टिकोण से यह अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, साझा मानवता, वैश्विक स्वास्थ्य न्याय और बहुपक्षीय संस्थाओं की मजबूती की दिशा में एक पहल थी। वास्तव में भारत की नीति इन दोनों का समन्वय थी। यही समन्वय भारतीय विदेश नीति की विशिष्टता भी है—नैतिक भाषा और रणनीतिक उद्देश्य का संयोजन।

6. कोविड-19 वैश्विक परिप्रेक्ष्य और वैक्सीन राष्ट्रवाद

2020 के मध्य से ही यह स्पष्ट हो गया था कि टीका विकास अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का केंद्रीय प्रश्न बनने वाला है। वैक्सीन अनुसंधान में अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, चीन और भारत प्रमुख रूप से उभरे। परंतु टीका उपलब्ध होते ही वितरण में तीव्र असमानता दिखाई दी। समृद्ध देशों ने फार्मा कंपनियों के साथ अग्रिम खरीद समझौते कर लिये, जबकि अधिकांश विकासशील देशों को कोवैक्स पर निर्भर रहना पड़ा। यह स्थिति न्याय, नैतिकता और वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से गंभीर थी (The Lancet, 2021)।

इसी दौरान चीन और रूस ने अपनी वैक्सीनों को कूटनीतिक माध्यम के रूप में प्रयोग करना शुरू किया। चीन ने "हेल्थ सिल्क रोड" के विचार को आगे बढ़ाया और साइनोफार्म तथा साइनोवैक टीकों की आपूर्ति एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में बढ़ाई। रूस ने स्पुतनिक-वी को तकनीकी क्षमता और वैज्ञानिक पुनरुत्थान के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। भारत की वैक्सीन कूटनीति इसी व्यापक "वैक्सीन भू-राजनीति" का हिस्सा थी, किंतु उसकी विशिष्टता

यह थी कि भारत के पास विकासशील विश्व के साथ ऐतिहासिक संबंध, औषधीय उत्पादन की विश्वसनीयता और लोकतांत्रिक वैधता के तत्व एक साथ मौजूद थे।

7. भारत की वैक्सीन कूटनीति: स्वरूप और विस्तार

7.1 भारत की संरचनात्मक क्षमता

भारत की वैक्सीन कूटनीति के सफल प्रारंभ का सबसे बड़ा कारण उसकी उत्पादन क्षमता थी। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया का बड़े पैमाने पर निर्माण अनुभव, भारत बायोटेक की अनुसंधान क्षमता, सार्वजनिक क्षेत्र की वैज्ञानिक संस्थाएं, और औषधि निर्माण में भारत की वैश्विक भूमिका—इन सबने मिलकर ऐसी आधारभूमि बनाई जिसमें भारत शीघ्र ही घरेलू टीकाकरण और निर्यात दोनों की दिशा में बढ़ सका। कोविशील्ड को अपेक्षाकृत शीघ्र अंतर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता मिली क्योंकि यह ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका वैक्सीन का भारत-निर्मित संस्करण थी। कोवैक्सीन का महत्व इस बात में था कि यह भारत की स्वदेशी वैज्ञानिक क्षमता का प्रतीक थी। यद्यपि प्रारंभिक चरण में इसके बारे में कुछ प्रश्न उठे, किंतु भारत के लिए यह तकनीकी आत्मनिर्भरता का महत्वपूर्ण प्रतीक बनी।

7.2 वैक्सीन मैत्री के तीन स्तंभ

भारत की वैक्सीन मैत्री पहल को मोटे तौर पर तीन प्रमुख स्तंभों में समझा जा सकता है:

- पहला, अनुदान आधारित आपूर्ति। इस श्रेणी में भारत ने अपने पड़ोसी देशों तथा कुछ छोटे और विकासशील देशों को मुफ्त वैक्सीन प्रदान की। भूटान, मालदीव, नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका, मॉरीशस, सेशेल्स, डोमिनिका, बारबाडोस आदि देश इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह चरण स्पष्ट रूप से मानवीय सहायता, सद्भावना और प्रतीकात्मक कूटनीति से जुड़ा था।
- दूसरा, वाणिज्यिक आपूर्ति। सीरम इंस्टीट्यूट द्वारा ब्राजील, मोरक्को, दक्षिण अफ्रीका और अन्य देशों को वैक्सीन बिक्री के माध्यम से उपलब्ध कराई गई। यह न केवल औद्योगिक-आर्थिक आयाम था, बल्कि इसने भारत को विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया।
- तीसरा, कोवैक्स सुविधा के माध्यम से आपूर्ति। भारत कोवैक्स के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि विकासशील देशों तक वैक्सीन पहुंचाने के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन की आवश्यकता थी। मार्च 2021 तक भारत कोवैक्स आपूर्ति श्रृंखला का प्रमुख आधार बन चुका था (WHO, 2021)।

7.3 समयरेखा

20 जनवरी 2021 को भूटान और मालदीव को वैक्सीन की पहली खेप भेजी गई। इसके बाद कुछ ही दिनों में बांग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, सेशेल्स, मॉरीशस और अन्य देशों को आपूर्ति शुरू हुई। मार्च 2021 के मध्य तक भारत 70 से अधिक देशों को करोड़ों खुराकें भेज चुका था। यह तेज गति अपने आप में एक उल्लेखनीय कूटनीतिक उपलब्धि थी। परंतु अप्रैल 2021 में दूसरी लहर ने इस प्रक्रिया को रोक दिया और भारत को निर्यात स्थगित करना पड़ा।

8. पड़ोस प्रथम नीति पर प्रभाव

भारत की वैक्सीन कूटनीति का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव दक्षिण एशिया में दिखाई दिया। यह क्षेत्र लंबे समय से भारत और चीन के बीच प्रभाव-प्रतिस्पर्धा का केंद्र रहा है। अवसंरचना निवेश, ऋण, बंदरगाह, डिजिटल नेटवर्क और सुरक्षा सहयोग के अलावा अब स्वास्थ्य भी इस प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बन गया।

8.1 भूटान और मालदीव

भूटान और मालदीव को सबसे पहले वैक्सीन भेजना एक प्रतीकात्मक और रणनीतिक निर्णय था। दोनों देश भारत की निकटतम पड़ोसी नीति के केंद्र में हैं। भूटान में भारत के प्रति विश्वास पहले से मौजूद था; वैक्सीन आपूर्ति ने इसे और मजबूत किया। मालदीव में भारत की यह पहल विशेष महत्व रखती थी क्योंकि वहां चीन ने पर्यटन, अवसंरचना और ऋण के माध्यम से अपनी उपस्थिति बढ़ाई थी। भारत ने स्वास्थ्य सहयोग के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई।

8.2 बांग्लादेश

बांग्लादेश भारत की पड़ोस नीति में केंद्रीय देश है। सुरक्षा, सीमा, नदी-जल, व्यापार, संपर्क और पूर्वोत्तर भारत की रणनीति—सभी में इसका महत्व है। वैक्सीन आपूर्ति ने भारत-बांग्लादेश संबंधों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया। बांग्लादेश को भारत से प्रारंभिक वैक्सीन उपलब्धता मिली, जिसने दोनों देशों की साझेदारी को मजबूत किया। हालांकि बाद में भारतीय निर्यात रुकने से बांग्लादेश को वैकल्पिक स्रोतों की ओर देखना पड़ा, जिससे चीन को अवसर मिला। फिर भी, प्रारंभिक चरण में भारत ने उल्लेखनीय कूटनीतिक लाभ अर्जित किया।

8.3 नेपाल

नेपाल में भारत-चीन प्रतिस्पर्धा लंबे समय से सक्रिय है। सीमाविवाद, राजनीतिक अस्थिरता और घरेलू विमर्श में भारत-विरोधी तथा चीन-समर्थक प्रवृत्तियों के बीच वैक्सीन सहयोग भारत के लिए एक अवसर था। भारत ने नेपाल को शीघ्र आपूर्ति कर सद्भावना अर्जित की। किंतु आपूर्ति में निरंतरता की समस्या के कारण नेपाल ने चीन से भी टीके प्राप्त किये। इससे स्पष्ट हुआ कि केवल प्रारंभिक सहायता पर्याप्त नहीं, बल्कि स्थायी आपूर्ति भी आवश्यक है।

8.4 श्रीलंका

श्रीलंका में चीन की भूमिका, विशेषकर हंबनटोटा और कोलंबो पोर्ट सिटी जैसे प्रकल्पों के कारण, भारत की चिंता का विषय रही है। ऐसे में वैक्सीन सहयोग ने भारत को संवेदनशील समय में एक "विश्वसनीय मित्र" के रूप में पुनर्स्थापित किया। यह कूटनीति सैन्य या आर्थिक दबाव के बजाय स्वास्थ्य सहायता पर आधारित थी, जिसने भारत की छवि को सकारात्मक बनाया।

8.5 म्यांमार

म्यांमार भारत की एक्ट ईस्ट नीति, उत्तर-पूर्वी सुरक्षा और चीन-प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैक्सीन आपूर्ति ने भारत-म्यांमार सहयोग को गहरा करने का अवसर दिया, हालांकि 2021 के सैन्य तख्तापलट ने आगे की राजनीतिक दिशा जटिल बना दी।

समग्र रूप से देखा जाए तो वैक्सीन कूटनीति ने पड़ोस प्रथम नीति को ठोस स्वरूप दिया। उसने क्षेत्रीय नेतृत्व को नैतिक वैधता प्रदान की और यह संकेत दिया कि भारत संकट की घड़ी में क्षेत्रीय सार्वजनिक वस्तु उपलब्ध करा सकता है। हालांकि यह लाभ दूसरी लहर के बाद आंशिक रूप से कमजोर हुआ।

9. भारत-चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और 'वैक्सीन भू-राजनीति'

भारत और चीन के बीच वैक्सीन प्रतिस्पर्धा वैश्विक शक्ति-संतुलन की एक नई अभिव्यक्ति थी। चीन ने अपनी वैक्सीनों को बेल्ट एंड रोड के पूरक उपकरण के रूप में उपयोग किया। उसका उद्देश्य यह दिखाना था कि वह एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति है जो विकासशील देशों की जरूरतों को पूरा कर सकती है। भारत ने भी इसी क्षेत्र में वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत किया, किंतु दोनों की रणनीति में कुछ महत्वपूर्ण अंतर थे।

पहला, भारत की आपूर्ति का प्रारंभिक ध्यान पड़ोस और लोकतांत्रिक तथा विकासशील साझेदारों पर था, जबकि चीन की रणनीति अधिक व्यापक वाणिज्यिक और प्रभाव-विस्तार आधारित थी। दूसरा, भारत की "फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड" छवि पहले से निर्मित थी, जिससे उसकी विश्वसनीयता अधिक थी। तीसरा, भारत के पास पश्चिमी लोकतंत्रों के साथ भी सहयोग की क्षमता थी, जैसा कि क्वाड वैक्सीन पहल में दिखा। इस अर्थ में भारत की वैक्सीन कूटनीति चीन-विरोधी प्रतिरोध मात्र नहीं थी; वह एक वैकल्पिक वैधता-आधारित मॉडल भी थी।

फिर भी, जब भारत ने निर्यात रोक दिया, तब चीन को कई देशों में रिक्त स्थान भरने का अवसर मिला। इससे यह स्पष्ट हुआ कि भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में केवल नैतिक संदेश ही नहीं, बल्कि आपूर्ति निरंतरता भी निर्णायक होती है। इसलिए भारत-चीन वैक्सीन प्रतिस्पर्धा का अंतिम आकलन मिश्रित है—भारत ने आरंभिक बढ़त ली, पर उसे लंबे समय तक बनाए नहीं रख सका।

10. अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन में भारत की छवि

भारत की वैक्सीन कूटनीति का एक महत्वपूर्ण प्रभाव उन क्षेत्रों में पड़ा जहां भारत परंपरागत रूप से नैतिक और विकास सहयोगी छवि रखता था, किंतु चीन की आर्थिक उपस्थिति अधिक तेज रही है—जैसे अफ्रीका और लैटिन अमेरिका।

10.1 अफ्रीका

अफ्रीकी देशों के लिए सस्ती, सुलभ और सरल भंडारण वाली वैक्सीन अत्यंत महत्वपूर्ण थी। कोविशील्ड इस दृष्टि से उपयोगी थी। भारत ने अफ्रीकी देशों को अनुदान और कोवैक्स दोनों माध्यमों से आपूर्ति की। अफ्रीकी संघ की प्रशंसा और भारत के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रियाओं ने संकेत दिया कि स्वास्थ्य सहयोग भारत-अफ्रीका संबंधों को नई दिशा दे सकता है। यह भारत की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार दावेदारी के लिए भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि अफ्रीकी देशों का सामूहिक समर्थन निर्णायक माना जाता है।

10.2 लैटिन अमेरिका

ब्राजील को वैक्सीन आपूर्ति ने भारत की लैटिन अमेरिकी उपस्थिति को दृश्य बनाया। महामारी से गंभीर रूप से प्रभावित ब्राजील के लिए यह अत्यंत उपयोगी सहयोग था। भारत-ब्राजील संबंध पहले ब्रिक्स और जी-20 जैसे मंचों पर आधारित थे, पर वैक्सीन सहयोग ने उनमें मानवीय गहराई जोड़ी।

10.3 कैरिबियन

डोमिनिका, बारबाडोस और अन्य कैरिबियाई देशों द्वारा भारत को सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान किया जाना इस बात का सूचक था कि छोटी शक्तियों के लिए संकट-कालीन सहायता कितनी महत्व रखती है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अक्सर छोटे देशों के महत्व को कम करके आंका जाता है, किंतु संयुक्त राष्ट्र महासभा और बहुपक्षीय मंचों पर ये देश नैतिक समर्थन और मतदान के लिहाज से अहम होते हैं। भारत की वैक्सीन कूटनीति ने इस आयाम को भी रेखांकित किया।

11. क्वाड वैक्सीन पहल और हिंद-प्रशांत राजनीति

मार्च 2021 के क्वाड शिखर सम्मेलन में भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए वैक्सीन उत्पादन और वितरण के सहयोग की घोषणा की। इस योजना के अंतर्गत भारत में वैक्सीन उत्पादन, जापान से वित्तीय सहायता, अमेरिका से तकनीकी समर्थन और ऑस्ट्रेलिया से लॉजिस्टिक सहयोग का ढांचा उभरा (Hall, 2021; Basrur and de Estrada, 2021)। यह पहल कई स्तरों पर महत्वपूर्ण थी। पहला, इसने यह दिखाया कि भारत केवल प्राप्तकर्ता या परिधीय साझेदार नहीं, बल्कि क्वाड का केंद्रीय उत्पादन-आधार है। दूसरा, यह स्वास्थ्य सुरक्षा को हिंद-प्रशांत रणनीति के साथ जोड़ता था। तीसरा, इसे चीन के हेल्थ सिल्क रोड का वैकल्पिक मॉडल भी माना गया। चौथा, इससे भारत की "रणनीतिक स्वायत्तता" और "बहु-संरेखीय कूटनीति" का नया रूप सामने आया—भारत एक ओर ग्लोबल साउथ की आवाज था, दूसरी ओर पश्चिमी लोकतंत्रों के साथ मिलकर क्षेत्रीय सार्वजनिक वस्तु भी प्रदान कर रहा था। क्वाड वैक्सीन पहल ने यह भी प्रमाणित किया कि स्वास्थ्य कूटनीति अब व्यापक भू-राजनीतिक वास्तुशिल्प का भाग बन चुकी है। भारत की भूमिका यहां इसलिए विशेष थी क्योंकि उसके बिना उत्पादन-पहल व्यावहारिक रूप से संभव नहीं थी। इसने भारत की विनिर्माण-आधारित रणनीतिक उपयोगिता को उजागर किया।

12. बहुपक्षीय मंचों पर भारत का नेतृत्व

12.1 ट्रिप्स छूट प्रस्ताव

अक्टूबर 2020 में भारत और दक्षिण अफ्रीका ने विश्व व्यापार संगठन में कोविड-19 से संबंधित चिकित्सा उत्पादों, वैक्सीनों, निदान और उपचारों पर बौद्धिक संपदा प्रावधानों में अस्थायी छूट का प्रस्ताव रखा। यह पहल महज कानूनी या आर्थिक प्रश्न नहीं थी; यह वैश्विक न्याय, तकनीकी पहुंच और सार्वजनिक स्वास्थ्य की नैतिकता का प्रश्न बन गई।

भारत ने तर्क दिया कि महामारी जैसी आपात स्थिति में पेटेंट सुरक्षा की कठोरता वैश्विक जन-स्वास्थ्य के विरुद्ध जा सकती है। इससे भारत ग्लोबल साउथ के हितों के संरक्षक के रूप में उभरा।

12.2 कोवैक्स और वैश्विक स्वास्थ्य शासन

कोवैक्स व्यवस्था की सफलता में भारत की भूमिका प्रारंभिक चरण में अत्यंत निर्णायक थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन और गावी के लिए भारत का योगदान केवल आपूर्ति का प्रश्न नहीं था; यह वैश्विक स्वास्थ्य शासन की विश्वसनीयता से भी जुड़ा था। यदि भारत जैसे उत्पादक देश सहयोग न करें, तो बहुपक्षीय संरचनाएं व्यवहार में कमजोर पड़ जाती हैं। इस दृष्टि से भारत बहुपक्षीय सार्वजनिक वस्तुओं के प्रदाता के रूप में उभरा।

12.3 संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक छवि

भारत ने संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य बहुपक्षीय मंचों पर बार-बार यह दोहराया कि महामारी से मुकाबले के लिए न्यायपूर्ण और समावेशी वैश्विक व्यवस्था आवश्यक है। यह रुख भारत की पारंपरिक बहुपक्षवाद-समर्थक नीति के अनुरूप था। हालांकि भारत स्वयं कभी-कभी वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण के बीच संतुलन साधता है, पर कोविड-19 के दौरान उसने अपेक्षाकृत स्पष्ट रूप से वैक्सीन समता का पक्ष लिया।

13. भारत की वैश्विक छवि और सॉफ्ट पावर में परिवर्तन

भारत की वैक्सीन कूटनीति ने अल्पकाल में उसकी वैश्विक छवि को उल्लेखनीय रूप से सुदृढ़ किया। कई देशों के नेताओं द्वारा सार्वजनिक धन्यवाद, सोशल मीडिया पर भारत के प्रति सकारात्मक रुझान, और कूटनीतिक वक्तव्यों में भारत को "विश्वसनीय मित्र" या "मानवता का भागीदार" कहा जाना इस परिवर्तन का संकेत था। भारत की छवि केवल एक उभरती अर्थव्यवस्था या क्षेत्रीय शक्ति तक सीमित नहीं रही; वह एक जिम्मेदार, समाधान-उन्मुख, और मानवीय शक्ति के रूप में उभरने लगा। इस परिवर्तन का संबंध भारत की दीर्घकालीन आकांक्षाओं से था। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता, एनएसजी सदस्यता, वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं में स्थान, और विकासशील देशों के हितों का प्रतिनिधित्व—इन सभी प्रश्नों में नैतिक पूंजी और वैश्विक सद्भावना की भूमिका होती है। वैक्सीन मैत्री ने भारत को ऐसी पूंजी अर्जित करने का अवसर दिया। किन्तु सॉफ्ट पावर की स्थिरता के लिए आवश्यक है कि नीति और क्षमता में अंतर न हो। दूसरी लहर के बाद निर्यात रोकने से भारत की छवि में द्वंद्व उभरा—एक ओर "दुनिया की मदद करने वाला भारत", दूसरी ओर "अपनी ही जनता के संकट से जूझता भारत"। यह विरोधाभास भारत की सॉफ्ट पावर की सबसे बड़ी परीक्षा बना।

14. सीमाएं, आलोचनाएं और अंतर्विरोध

14.1 दूसरी लहर और निर्यात प्रतिबंध

अप्रैल 2021 में भारत में कोविड-19 की दूसरी लहर अत्यंत गंभीर रूप में सामने आई। ऑक्सीजन, अस्पताल बेड, दवाओं और वैक्सीन की कमी की व्यापक खबरें सामने आईं। सरकार पर यह आरोप लगा कि उसने घरेलू जरूरतों का यथार्थ आकलन किए बिना निर्यात और कूटनीतिक छवि-निर्माण पर अधिक जोर दिया। वैक्सीन निर्यात पर रोक लगाना तात्कालिक रूप से अपरिहार्य हो सकता था, पर इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की विश्वसनीयता को आघात पहुंचा।

14.2 कोवैक्स पर प्रभा

भारत कोवैक्स का प्रमुख आपूर्तिकर्ता था। भारतीय निर्यात रुकने से कई देशों, विशेषकर अफ्रीकी देशों में टीकाकरण कार्यक्रम प्रभावित हुए। इससे यह स्पष्ट हुआ कि वैश्विक स्वास्थ्य शासन किसी एक बड़े उत्पादक पर अत्यधिक निर्भर होने की स्थिति में कितना असुरक्षित हो सकता है

14.3 "कूटनीतिक अतिविस्तार" की आलोचना

कुछ विश्लेषकों ने भारत की नीति को "कूटनीतिक अतिविस्तार" कहा। उनका तर्क था कि भारत ने अपनी उत्पादन क्षमता, घरेलू मांग, दूसरी खुराक की योजना और महामारी की संभावित लहरों का पर्याप्त यथार्थवादी आकलन नहीं किया। इस दृष्टिकोण के अनुसार भारत ने प्रारंभिक सफलता के लिए दीर्घकालिक क्षमता-संतुलन की उपेक्षा की।

14.4 घरेलू बनाम अंतर्राष्ट्रीय प्राथमिकताएं

यह भी एक महत्वपूर्ण नीति-दुविधा थी कि किसी लोकतांत्रिक राज्य को महामारी के दौरान पहले अपनी जनसंख्या की रक्षा करनी चाहिए या वैश्विक जिम्मेदारी निभानी चाहिए। भारत ने आरंभिक चरण में दोनों को संतुलित करने की कोशिश की, परंतु दूसरी लहर ने सिद्ध कर दिया कि जब घरेलू संकट तीव्र हो जाता है, तब अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को बनाए रखना कठिन हो जाता है। यही वह बिंदु है जहां स्वास्थ्य कूटनीति और घरेलू सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़ जाती हैं।

15. क्षमता बनाम महत्वाकांक्षा: भारतीय राज्य की परीक्षा

भारत की वैक्सीन कूटनीति का सबसे बड़ा पाठ यही है कि अंतर्राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा को घरेलू क्षमता के साथ संतुलित करना अनिवार्य है। भारत के पास उत्पादन की क्षमता थी, परंतु महामारी की तीव्रता, जनसंख्या का आकार, संघीय प्रशासनिक जटिलता, आपूर्ति श्रृंखला, कच्चे माल की उपलब्धता, और नीति-समन्वय—इन सबने उसकी सीमाएं उजागर कर दीं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भविष्य की किसी भी स्वास्थ्य कूटनीति के लिए केवल औद्योगिक क्षमता पर्याप्त नहीं; उसके साथ पूर्वानुमान, भंडारण, सार्वजनिक स्वास्थ्य निवेश, और संकट-तैयारी भी आवश्यक है।

16. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की शक्ति-संरचना पर प्रभाव

अब प्रश्न यह है कि भारत की वैक्सीन कूटनीति ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की शक्ति-संरचना को कैसे प्रभावित किया। इसका उत्तर कई स्तरों पर दिया जा सकता है

- पहला, इसने स्वास्थ्य को शक्ति के स्रोत के रूप में स्थापित किया। परंपरागत रूप से शक्ति का संबंध सैन्य, आर्थिक और तकनीकी तत्वों से जोड़ा जाता रहा है, किंतु कोविड-19 ने स्पष्ट किया कि वैक्सीन उत्पादन और वितरण क्षमता भी शक्ति का निर्णायक रूप हो सकती है।
- दूसरा, इसने मध्यम शक्ति और उभरती शक्ति के बीच की रेखाओं को पुनर्परिभाषित किया। भारत ने सिद्ध किया कि कोई देश सैन्य दृष्टि से महाशक्ति न होते हुए भी वैश्विक संकट में केंद्रीय भूमिका निभा सकता है।
- तीसरा, इसने बहुध्रुवीयता की प्रक्रिया को बल दिया। वैक्सीन पर अमेरिका, यूरोप, चीन, रूस और भारत जैसे अनेक केंद्र उभरे। भारत की भूमिका ने यह संकेत दिया कि वैश्विक दक्षिण से भी नियम-निर्माण, आपूर्ति और नैतिक एजेंडा-निर्धारण संभव है।
- चौथा, इसने "रणनीतिक सार्वजनिक वस्तु" की अवधारणा को मजबूत किया। वैक्सीन केवल स्वास्थ्य उत्पाद नहीं रही; वह ऐसी सार्वजनिक वस्तु बन गई जिसके माध्यम से गठबंधन, प्रभाव, वैधता और नेतृत्व निर्मित होने लगे।
- पांचवां, इसने यह भी दिखाया कि अंतर्राष्ट्रीय शक्ति अब आपूर्ति-श्रृंखला लचीलेपन, जैव-प्रौद्योगिकी, बौद्धिक संपदा राजनीति और विनिर्माण अवसंरचना से जुड़ी हुई है। भारत की भूमिका इसी नए भू-राजनीतिक युग की द्योतक थी।

17. भारतीय विदेश नीति के दीर्घकालिक निहितार्थ

भारत की वैक्सीन कूटनीति के अनुभव से भारतीय विदेश नीति के लिए कुछ दीर्घकालिक संकेत उभरते हैं।

1. स्वास्थ्य, दवा और जैव-प्रौद्योगिकी भारत की भविष्य की कूटनीतिक पूंजी बन सकते हैं।
2. दक्षिण एशिया में भारत को "प्रथम प्रत्युत्तरकर्ता" और "क्षेत्रीय सार्वजनिक वस्तु प्रदाता" की भूमिका संस्थागत रूप से विकसित करनी होगी।

3. क्वाड, ब्रिक्स, जी-20 और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर स्वास्थ्य सुरक्षा भारत के लिए स्थायी एजेंडा बन सकती है।
4. ट्रिप्स छूट जैसी पहलों के माध्यम से भारत ग्लोबल साउथ के मानक-निर्माण एजेंडे को आगे बढ़ा सकता है।
5. सॉफ्ट पावर की स्थिरता के लिए घरेलू स्वास्थ्य अवसंरचना और उत्पादन-क्षमता में दीर्घकालिक निवेश अनिवार्य है।
6. भारत को निर्यात-उन्मुख नीति और घरेलू टीकाकरण आवश्यकताओं के बीच बेहतर पूर्व-योजना विकसित करनी होगी।

18. समालोचनात्मक मूल्यांकन

भारत की वैक्सीन कूटनीति को न तो पूरी तरह महिमामंडित करना उचित है और न ही उसे विफल कहना। यदि केवल जनवरी से मार्च 2021 तक की अवधि देखी जाए, तो यह भारतीय विदेश नीति की सबसे सफल समकालीन पहलों में से एक प्रतीत होती है। यदि अप्रैल से जुलाई 2021 के संकट को केंद्र में रखा जाए, तो इसकी सीमाएं अधिक स्पष्ट दिखाई देती हैं। वस्तुतः यह पहल "उच्च क्षमता वाले लेकिन असमान रूप से तैयार राज्य" की कहानी है—ऐसा राज्य जो संकट में विश्व को सहयोग दे सकता है, पर अपने ही विशाल घरेलू दबावों से एकाएक जूझने लगता है।

इसलिए उचित निष्कर्ष यह होगा कि भारत की वैक्सीन कूटनीति एक "अपूर्ण सफलता" थी। उसने भारत की संभावनाएं सिद्ध कीं, पर साथ ही उसकी संरचनात्मक कमियां भी उजागर कीं। यह सफलता और सीमा—दोनों का संयुक्त अनुभव है।

19. निष्कर्ष

कोविड-19 काल में भारत की वैक्सीन कूटनीति 21वीं सदी की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसने स्पष्ट किया कि स्वास्थ्य, विज्ञान, औषधि उत्पादन और मानवीय सहयोग आज की वैश्विक शक्ति संरचना के केंद्रीय घटक बन चुके हैं। भारत ने 'वैक्सीन मैत्री' के माध्यम से न केवल टीकों की आपूर्ति की, बल्कि अपने विदेश नीति सिद्धांतों—वसुधैव कुटुंबकम, पड़ोस प्रथम, दक्षिण-दक्षिण सहयोग और बहुपक्षवाद—को व्यावहारिक रूप दिया। इससे भारत की सॉफ्ट पावर बढ़ी, पड़ोसी देशों में उसकी उपयोगिता पुनर्परिभाषित हुई, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में सद्भावना बढ़ी, और क्वाड जैसे मंचों पर उसकी केंद्रीयता उभरी। साथ ही, यह भी उतना ही सत्य है कि अप्रैल 2021 की दूसरी लहर ने इस कूटनीति की नाजुकता को उजागर कर दिया। निर्यात रोक, कोवैक्स आपूर्ति व्यवधान, और घरेलू स्वास्थ्य संकट ने यह दिखाया कि अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व तभी टिकाऊ होता है जब उसके पीछे मजबूत राज्य क्षमता, पूर्वानुमानित नीति और सतत उत्पादन-प्रबंधन हो। भारत ने एक ओर यह सिद्ध किया कि ग्लोबल साउथ का देश भी नियम-निर्माता, आपूर्ति प्रदाता और नैतिक एजेंडा-निर्धारक बन सकता है; दूसरी ओर उसने यह भी अनुभव किया कि घरेलू सुदृढ़ता के बिना वैश्विक दावेदारी स्थिर नहीं रह सकती। अतः शोध प्रश्न के उत्तर में कहा जा सकता है कि भारत की वैक्सीन कूटनीति ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की शक्ति-संरचना को तीन प्रमुख तरीकों से प्रभावित किया: पहला, उसने स्वास्थ्य को शक्ति और कूटनीति के केंद्रीय संसाधन के रूप में स्थापित किया; दूसरा, उसने भारत को क्षेत्रीय से वैश्विक स्तर पर एक उत्तरदायी, मानवीय और रणनीतिक शक्ति के रूप में उभारा; और तीसरा, उसने बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में ग्लोबल साउथ की एजेंसी को अधिक दृश्य बनाया। परंतु इस समस्त प्रक्रिया का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण पाठ यही है कि सॉफ्ट पावर की वास्तविक नींव घरेलू संस्थागत क्षमता, उत्पादन-स्थिरता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संरचना में निहित होती है।

संदर्भ सूची

1. Basrur, R., & de Estrada, K. S. (2021). The Quad and vaccine diplomacy. *International Affairs, 97*(5), 1431–1448. https://doi.org/10.1093/ia/iiab104
2. Chatterjee, P. (2021, February 12). India's vaccine diplomacy in South Asia. *The Diplomat*.
3. Hall, I. (2021). *India's vaccine diplomacy and the Quad* (Policy Brief). Australian Strategic Policy Institute.
4. Nye, J. S. (2004). *Soft power: The means to success in world politics*. PublicAffairs.

5. Suri, N. (2021). *India's vaccine diplomacy* (ORF Issue Brief No. 455). Observer Research Foundation.
6. The Lancet. (2021). Access to COVID-19 vaccines: Global approaches in a changing world. *The Lancet*, *397*(10278), 941–942.
7. United Nations. (2021, February 17). *Secretary-General's remarks to the Security Council on COVID-19 vaccines* [Speech transcript]. https://www.un.org/sg/en/content/sg/statement/2021-02-17/secretary-generals-remarks-the-security-council-the-implementation-of-resolution-2532-2020-the-cessation-of-hostilities-the-context-of-the-covid-19-pandemic-and
8. World Health Organization. (2021, March 23). *COVAX global supply forecast*.
9. Bharat Sarkar, Videsh Mantralaya [Ministry of External Affairs, Government of India]. (2021). *Vaccine Maitri*. https://www.mea.gov.in/vaccine-maitri.htm
10. Mukherjee, A. (2021). Covid-19 aur Bharatiya videsh niti [COVID-19 and Indian foreign policy]. *India Quarterly*, *77*(2), 201–218.